सामाजिक विज्ञान शोध की प्रविधि हो अत्त-दीप-भवं से प्रेरित-कुलपति राय

हिन्दी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र में पांच दिवसीय शोध कार्यशाला का उद्घाटन

सामाजिक विज्ञान शोध की प्रविधि अत्त दीप भव से अनुप्राणित होना चाहिए एवं मिथकीय विश्वासों व शास्त्रोंक्त परंपराओं से परे होनी चाहिए। उक्त बातें कुलपति विभूति नारायण राय ने शुक्रवार को महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के तत्वाधान में आयोजित सात दिवसीय शोध प्रविधि एवं कंप्यूटर अनुप्रयोग की सात दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के अध्यक्षीय संबोधन में शोधार्थियों व शिक्षकों को संबोधित करते हुए कही। कुलपति राय ने कहा कि एक शोधार्थी को सदा प्रश्नों के प्रति जिज्ञासु, तर्कशील एवं विवेक की कसौटी को साथ में लेकर चलने वाला होना चाहिए। ऐसा करने से शोध कार्य सामाजिक अवसंरचना की भविष्य की चुनौतियों को सकारात्मक परिवेश में बदल सके ।

हच्बीब तनवीर सभागार में १४ से २० से सात दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित प्रख्यात सामाजिक विज्ञान शोध पर्यवेक्षक, राष्ट्रीय सलाहकार प्रो. बी. आर. पाटिल ने कहा कि विज्ञान की तरह ही सामाजिक विज्ञान की शोध प्रक्रिया उद्देश्यपरक होती है । कौटिल्य का उदाहरण देते हुए प्रो. पाटिल ने कहा कि जैसे सुख की प्राप्ति के मूल में धर्म, धर्म के मूल में अर्थ, अर्थ के मूल में राज्य और श्रेष्ठ राज्य के मूल में इंद्रियनियंत्रित राजा होता है । उसी प्रकार एक अच्छे शोध के मूल में शोधार्थी के लिए सामाजिक हित की खोज का उद्देश्य अंतःस्थ होता है । प्रो. पाटिल ने अंतरानुशासनात्मक शोध को विषमता, अन्याय, भेदभाव जैसी सामाजिक समस्याओं के समाधान करने की दिशा में ज्यादा कारगर बताया एवं कहा कि कारण की जगह लक्षण देखकर शोध या इलाज करने की प्रवृत्ति खतरनाक है । शोध को समाज के प्रति प्रतिबद्ध बताते हुए उन्होंने कहा कि शोध में महज आंकड़ों की प्रस्तुति से बचना चाहिए । वर्तमान में शोध की प्रासंगिकता को बताते हुए उन्होंने कहा कि गुगल सर्च के माध्यम से इंटरनेटी शोध उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को समाप्त कर रहे है। शोध में शोधार्थी द्वारा सामाजिक भागीदारी पर्यवेक्षण की प्रविधि द्वारा इस खाई को पाटा जा सकता है ।

जेएनयू, नई दिल्ली के शोध विशेषज्ञ प्रो. आर. के. जैन ने कार्यशाला में भाग ले रहे छात्रों को बताया कि वे शोध को केवल मानसिक बुद्धि विलास के स्तर तक सीमित न करें बल्कि शोध को सामाजिक परिवर्तन हेतु दिशा सूचक के रूप में प्रतिस्थपित करने

की चेष्टा करें । उन्होंने कहा कि पूर्व में लिखित को सामग्री को उद्दृत करने के बजाए समस्या के यथार्थ को समझकर शोध का व्याख्यायित करना चाहिए । शोधार्थियों को उन्होंने की कहा कि विषय की कूपमंडूकता को तोड़कर अंतरानुशासनात्मक दृष्टिकोण विकसित किए जाने की आवश्यकता है ताकि इक्कसवीं सदी के अनुरूप सामाजिक विज्ञान शोध को वैचारिक भूमंडलीकरण व सामाजिक परिवर्तन की गति के साथ जोड़ा जा सके ।

कार्यशाला में छात्रों को प्रशिक्षण दे रहे भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली के पूर्व निदेशक व वर्तमान में इंटरनेशनल मीडिया रिसर्च संस्थान के निदेशक प्रो. जे. एस. यादव ने शोधार्थियों को शोध प्रविधि की मूल अवधारणाओं व उनके अनुप्रयोगात्मक पक्षों के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि शोध अनवरत जिज्ञासा के रूप में हर शोधार्थी के अंदर बना होना चाहिए। शोधार्थियों का हमेशा प्रयास होना चाहिए की सामाजिक विज्ञान विषयों के उच्चस्तरीय शोध के लिए श्रेष्ठ संचार तकनीक को अपनाना चाहिए । उन्होंने कहा कि ऐसा होने पर शोध में गुणात्मक विषय वस्तु विश्लेषण, स्त्रोत विश्लेषण को उनके मूल उद्देश्य के रूप में प्राप्त किया जा सके । शोध प्रविधि में उन्होंने रणनीतिक परिर्वतनों की गुंजाइश पैदा करने की आवश्यकता जताया । उन्होंने कहा कि ऐसा होने की दशा में भारतीय शोध पश्चिमी देशों में हो रहे शोध के से बेहतर हो पाएगा । इससे भारतीय सामाजिक समस्याओं को समझने में भी सहूलियत होगी ।

कुलपति विभूति नारायण राय ने अतिथियों को स्वागत स्मृति चिन्ह प्रदान कर किया । दीप प्रज्वलन से कार्यशाला का उद्घाटन किया गया । समारोह का संचालन करते हुए संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. अनिल के. राय 'अंकित' ने गुणवत्तापूर्ण शोध के लिए विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला । उन्होंने कहा कि संचार एवं मीडिया अध्ययन केंद्र शोध की दिशा में लगातर अग्रसर है । इसीलिए शोध में होने वाली कमियों को दूर करने के उद्देश्य से कार्यशाला आयोजित की गई है । विवि के प्रो. रामशरण जोशी ने आभार प्रकट करते हुए कहा कि समाज में परिवर्तन लाने के लिए अच्छे शोध की जरूरत है । इस अवसर पर देश के सामाजिक विज्ञान व मानविकी विषयों के शोध विशेषज्ञ व विवि के प्राध्यापक, पी.एच.डी., एमफिल के शोधार्थी व एम के विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

बी एस मिरगे

जनसंपर्क अधिकारी